Write in f/c L-2 Skt - VII

Page No.
Date : 5/5/2020

दुर्बुद्धिः विनश्यति
(दुष्ट बुद्धि वाले का विनाश होता है)

(I) अस्ति मगधदेशे फुल्लोत्पलनाम सरः। तत्र संकट विकट नामानौ द्वौ हंसौ निवसतः। कम्बुग्रीवनामा तयोः मित्रम् एकः कूर्मः अपि तत्रैव प्रतिवसति स्म।

अनुवाद → मगधदेश में फुल्लोत्पलनाम का एक तालाब था। वहाँ संकट और विकट नाम के दो हँस रहते थे। कम्बुग्रीव नाम का उनका दोस्त कछुआ भी वहीं रहता था।

II अथ एकदा ——————— गन्तुम् इच्छामि।

अनुवाद →

एक बार कुछ मछुआरे वहां आए और बोले- "हम कल मछलियों और कछुओं को मारेंगे। यह सुनकर कछुआ बोला - "दोस्तों। क्या तुम दोनों ने मछुआरों की बात सुनी? अब मैं क्या करूं?" दोनों हँस बोले - "सुबह जो ठीक होगा, वह किया जाएगा।" कछुआ बोला, "ऐसा मत कहो। वैसा करो, जिससे मैं दूसरे तालाब पर जा सकूँ।" दोनों हँस बोले - "हम क्या करें?" कछुआ बोला - "मैं तुम दोनों के साथ आकाश मार्ग से दूसरी जगह जाना चाहता हूँ।"

Sanskrit

II अथ एकदा धीवराः तत्र आगच्छन् अकथयन् च-वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः। एतत् श्रुत्वा कूर्मः अवदत्-''मित्रे! किं युवाभ्यां धीवराणां वार्ता श्रुता? अधुना किम् अहं करोमि?'' हंसौ अवदताम्- ''प्रातः यद् उचितं तत्कर्त्तव्यम्।'' कूर्मः अवदत्- ''मैवम्। तद् यथाऽहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।'' हंसौ अवदताम्-''आवां किं करवाव?'' कूर्मः अवदत्-''अहं युवाभ्या सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि।''